I demand that the Government must implement strict regulations on aquaculture and pollution, promote sustainable farming, restore mangroves through reforestation, engage and educate communities, enforce anti-logging laws, invest in climate-resilient infrastructure, and collaborate with environmental organizations to ensure effective conservation of West Bengal's mangroves.

Demand for special drive to encourage Sanskrit education

डा. भीम सिंह (बिहार): महोदय, दुनिया भी स्वीकार करती है कि वेद से पुराना कोई ग्रंथ नहीं है। वेद, उपनिषद और हमारे अन्य प्राचीन शास्त्र ज्ञान के भण्डार हैं। इनमें सब कुछ है। इनमें खगोल, भूगोल, भूगर्भ, चिकित्सा, रसायन, पदार्थ, गणित, ज्यामिति, कंप्यूटर , राजनीति, अर्थनीति आदि विषयों से लेकर तत्व मीमांसा जैसे गूढ़ विषयक ज्ञान भी हैं। पूर्व राष्ट्रपति व प्रसिद्ध दार्शनिक डॉ. राधाकृष्णन जी का मानना था कि उपनिषद के ऋषियों ने विचार की जिस ऊंचाई को प्राप्त कर लिया है, उससे अधिक मनुष्य जाति कभी सोच ही नहीं सकती है। पर हम अपने ज्ञान भण्डार का समुचित दोहन नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि हमारे ये ग्रंथ संस्कृत भाषा में हैं और संस्कृत आज ज्यादा पढ़ी नहीं जा रही है, लिहाजा मेरी सरकार से माँग है कि, (i) संस्कृत शिक्षा पर जोर देने के लिए विशेष अभियान चलाया जाए। (ii) वर्ग 4 से 12 तक संस्कृत की शिक्षा को अनिवार्य की जाए। (iii) CBSE, ICSE तथा KVS की तर्ज़ पर केंद्रीय संस्कृत शिक्षा बोर्ड की स्थापना की जाए। (iv) संस्कृत में उच्च शिक्षा हासिल करने वालों को उदारतापूर्वक छात्रवृत्तियाँ दी जाएं। (v) संस्कृत शिक्षा को रोजगारपरक बनाया जाए।

Demand to reduce the cost of CPAP machine, masks and pipe filters used for treating sleep apnea disorders

श्री नरेश बंसल (उत्तराखंड): महोदय, नींद मानव कार्यप्रणाली का एक आवश्यक हिस्सा है। नींद संबंधी विकार जीवन की गुणवत्ता को ख़राब करते हैं और इस प्रकार कई स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं पैदा करते हैं। भारतीय आबादी में नींद से जुड़ी बीमारियों का बोझ बहुत बड़ा है। आम तौर पर पाए जाने वाले नींद संबंधी विकारों में अनिद्रा, ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया, हाइपरसोमनिया, रेस्टलेस लेग सिंड्रोम और शिफ्ट वर्क डिसऑर्डर शामिल हैं। नींद की कमी या इसके बार-बार बाधित होने से होने वाले विनाशकारी परिणामों को स्वास्थ्य पेशेवरों द्वारा उजागर किया जाता है। "नींद अध्ययन" शब्द से आमतौर पर पॉलीसोम्नोग्राफी (पीएसजी) नींद संबंधी विकारों की गंभीरता के निदान और मूल्यांकन के लिए मानक है। नींद संबंधी विकारों के बारे में सार्वजनिक जागरूकता के कारण नींद के अध्ययन की माँग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। प्रयोगशाला-आधारित "पीएसजी" एक महंगा परीक्षण है और हर जगह उपलब्ध नहीं है। "CPAP MACHINE" और मास्क, पाइप फिल्टर, जो उपचार के रूप में पेशेंट्स को दिये जाते हैं, की लागत भी आम आदमी की सीमा से बहुत अधिक है। प्रभावी और अच्छे घरेलू परीक्षण नींद अध्ययन उपकरण बनाने के